बाइबल टीचर

वर्ष 19 | सितम्बर 2022 | अंक 10

सम्पादकीय

सीधे स्वर्ग में

आपने अक्सर लोगों को यह कहते सुना होगा कि वह व्यक्ति स्वर्ग सिधार गया है। यानि उनकी समझ के अनुसार ऐसा व्यक्ति स्वर्ग में चला गया है। कई लोग कहते हैं और कई प्रचारक भी यह शिक्षा देते हैं कि मरने के बाद आत्मा स्वर्ग में चली जाती है। बाइबल हमें बताती है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना आवश्यक है। (इब्रा. 9:27)। कई लोग ऐसा भी सोचते हैं कि मृत्यु के बाद सब कुछ समाप्त हो जाता है। परन्तु ऐसा नहीं है आत्मा अमर है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। बाइबल के अनुसार आत्मा अनन्तकाल में प्रवेश कर जाती है। अनन्तकाल एक ऐसा स्थान है जहां से कोई कभी वापस नहीं आता।

कुछ लोग शिक्षा देते हैं कि हमारी आत्मा परगोटेरी में चली जाती है। और वहां आत्माओं का शुद्धिकरण होता है। वे कहते हैं कि यहाँ उन्हें यानि आत्माओं को यात्नाएं दी जाती है अर्थात उन्हें दुख-दर्द का सामना करना पड़ता है। कुछ कहते हैं कि मनुष्य का फिर से जन्म होता है। यानि आत्मा फिर से किसी में प्रवेश करती है। कई शायद यह भी कहते है कि अगले जन्म में आप किसी पशु का रूप भी ले सकते है। मुझे यह बात सुनने में बड़ी अजीब सी लगती है क्योंकि बाइबल में लिखा है कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया है तथा परमेश्वर आत्मा है। (उत्पत्ति 1: 26)। लोग यह भी सिखाते हैं कि अच्छे कार्य करो तो निर्वाना मिलेगा। अर्थात् उद्धार या मुक्ति मिलेगी।

परन्तु हम यह देखना चाहेंगे कि इस विषय का सत्य क्या है? क्या वास्तव में कोई मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग में चला जाता है? क्या हम इसकी सच्चाई को जान सकते हैं? हम नहीं जानते हैं कि जो लोग अनन्त काल में जाते हैं वे वहां किस हाल में होंगे। क्योंकि वहां से कोई वापस नहीं आ सकता। यदि आप पक्की और सच्ची बात जानना

चाहते हैं तो एक भरोसेमन्द पुस्तक पवित्र बाइबल की तरफ आये। बाइबल परमेश्वर द्वारा दिया गया मनुष्य के लिये एक अधिकार है।

परमेश्वर ने यह बात अपने वचन में पक्के तौर पर बोली थी कि एक दिन सबका न्याय होना आवश्यक है। (प्रेरितों 17:31)। वचन यह भी बताता है कि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर व्यक्ति अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हो पाए। (2 कुरि. 5:10) परमेश्वर की ओर से यह बात पक्की है कि एक दिन सबका न्याय होगा और जो यीशु जगत का उद्धारकर्ता बनकर आया था वो ही एक दिन सबका न्याय करेगा। जो लोग उसकी इच्छा पर नहीं चलते वे सब उसके यह शब्द सुनकर चकित हो जायेंगे कि मेरे सामने से चले जाओ क्योंकि तुम मेरे पिता की इच्छा पर नहीं चले (मत्ती 7:21)। इंसाफ का तराजु यीशु के हाथ होगा क्योंकि रोमियों 14:10-12 में लिखा है हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। क्योंकि प्रभु कहता है मेरे जीवन की सौगंध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगी (रोमियों 14:11) किसी के लिए भी न्याय से बचने का मौका नहीं होगा क्योंकि लेखा तो देना ही पड़ेगा, हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा। न्याय के बाद कुछ लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे और कुछ लोग अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे इसलिये याद रखें कि कोई भी सीधे स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा। (मत्ती 25:46)। न्याय के दिन किसी को खुशी मिलेगी और किसी को गम मिलेगा जैसे कि लूका के 16 अध्याय में हम लाजरस और धनी व्यक्ति के विषय में पढ़ते हैं और दोनों के बीच में एक बहुत बड़ा गड्ढा था (लूका 16:23-26)।

मित्रों इस गलत फहमी को हम मन से निकाल दें कि यीशु में विश्वास करने वाले या धर्मी लोग मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग में चले जाते हैं। अभी कोई भी स्वर्ग में नहीं है, स्वर्ग में धर्मी लोग न्याय के बाद प्रवेश करेंगे। कई चर्च लीडर भी इस बात को गलत तरीके से बताते हैं कि यीशु के लोग सीधे स्वर्ग में जाते हैं। लाजरस अब्राहाम की गोद में था, और प्रसन्न था परन्तु स्वर्ग में नहीं था, वह पैराडाईस या अधोलोक में था। (लूका 23:43)। सारी आत्मायें न्याय के दिन तक इन्तजार करेंगी। अधोलोक जैसे स्थान को हम वेटिंग प्लेस की तरह देखते हैं। (2 पतरस 2:9)। सारी आत्मायें इसमें हैं तथा यहां दो भाग है एक भाग पर अच्छी आत्माएं हैं और दूसरे भाग पर बुरी आत्माएं। जिस भाग पर अधर्मी आत्माएं हैं उसे तारतरस भी कहते हैं।

एक और आवश्यक बात जो हमारे लिये जानना आवश्यक है कि मरने के बाद जब आत्मा चली जाती है तब हमारे हाथ में कुछ नहीं है कि हम अधर्मी आत्मा को सुखी स्थान में भेज दे या उसका पीड़ाजनक स्थान से तबादला करा दें। हम चाहे कुछ भी कर लें हम कुछ नहीं कर सकते, अच्छे कार्य कर लें या भूखों को खाना खिला दें। आत्मा जब चली जाती है तब परमेश्वर द्वारा उसका स्थान तय कर दिया जाता है। (लूका 16:26)। आप सभोपदेशक 1:3 तथा प्रकाशित 22:11 भी पढ़ सकते हैं। कहने की बात यह है कि दूसरा मौका नहीं मिलेगा। कई लोग सोचते हैं कि जिनकी मृत्यु हो गयी है। उनके लिये बपतिस्मा ले लें। यह शिक्षा भी गलत है। परन्तु आप कुछ

भी करके आत्मा का स्थान नहीं बदल सकते। बाइबल बताती हैं कि एक दिन सब आत्माओं का पुनरुत्थान होगा। (यूहन्ना 5:28, 29 तथा 1 कुरि. 15:20-57)। यानि सबका जो मर चुके हैं, एक दिन पुनरुत्थान होगा (प्रेरितों 24:15)।

हेडिस या आत्माओं का वेटिंग स्थान पुनरुत्थान के समय समाप्त हो जायेगा। (प्रकाशित 20:14)। सो न्याय के दिन का इन्तजार कीजिये क्योंकि वो दिन अवश्य आयेगा और सब कुछ साफ हो जायेगा। (मत्ती 12:41, 42; 25:31-46; प्रेरितों 17:31)। जो लोग प्रभु के प्रति विश्वास योग्य है तथा जिन्होंने अपने पापों को यीशु में बपतिस्मा लेकर धो लिया है वह स्वर्ग में प्रवेश करेगे। यीशु ने कहा था मृत्यु तक विश्वास योग्य बना रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा (प्रकाशित 2:10)।

आपने कहाँ से सीखा है?

सनी डेविड

बाइबल में रोमियों 10:17 में लिखा है कि ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' वास्तव में यह एक सिद्धान्त है। किसी भी बात पर विश्वास करने से पहले, हम उस बात के बारे में सुनते हैं, या पढ़ते हैं, या देखते हैं। हम में से किसी ने भी प्रभु यीशु मसीह को नहीं देखा है। पर हम ने उसके बारे में पढ़ा है और सुना हैं। पर हमारा विश्वास वही होता है, जो हम सुनते हैं या पढ़ते हैं। अब, जैसे कि, कुछ लोग यह विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह एक अच्छा शिक्षक था और एक धार्मिक गुरू था, पर इसके अलावा और कुछ नहीं था। अब ऐसा विश्वास वे क्यों करते हैं? निश्चय ही उनका विश्वास बाइबल में लिखी बातों पर आधारित नहीं है, पर ऐसा उन्होंने कहीं से या किसी से सुना है। क्योंकि बाइबल तो हमें यीशु मसीह के बारे में यह बताती है, कि वह स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। (यूहन्ना 1:1, 14)। वह आदि से परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था, और मनुष्य का उद्धार करने के लिये ईश्वरत्व से अलग होकर, स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था, और इसलिये वह पृथ्वी पर परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहलाया था। सो वह बड़ा ही महत्वपूर्ण है, कि आपने किस बात के बारे में कहां से सुना है।

अब ऐसे ही कुछ लोग विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह की मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है। पर वास्तविकता क्या है? प्रभु यीशु मसीह का जन्म कहाँ हुआ था? अमरीका में या इंग्लैण्ड में? मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर कहाँ मारा गया था? और सबसे पहले मसीह के सुसमाचार का प्रचार कहाँ किया गया था? बाइबल के अनुसार, यीशु मसीह का जन्म और उसके सब काम, उसकी मृत्यु और जी उठना और स्वर्ग पर वापस चले जाना, और उसके सुसमाचार का प्रचार किया जाना, ये सब बातें यरुशलेम में पूरी हुई थीं; और यरुशलेम एशिया में है। इसलिये, यह विश्वास करना कि मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है सही नहीं है। क्योंकि इससे भी पहले, कि पश्चिमी देशों में मसीह का सुसमाचार पहुंचता, प्रभु यीशु मसीह के अनेकों अनुयायी

एशिया में मौजूद थे।

प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इंकार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।'' (लूका 9:23) इसलिये, यह विश्वास करना कि किसी को सांसारिक वस्तुओं का लालच देकर मसीह का अनुयायी बनाया जा सकता है बिल्कुल सही नहीं है। क्योंकि मसीह का अनुयायी बनने के लिये स्वयं प्रत्येक व्यक्ति को एक यह व्यक्तिगत निश्चय करना आवश्यक है, कि क्या वह प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने को तैयार है? क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने का अभिप्राय इस बात से है, कि जो व्यक्ति मसीह का अनुसरण करना चाहता है; मसीह का एक अनुयायी बनना चाहता है; अर्थात् एक मसीही बनना चाहता है, उसे इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए, व्यक्तिगत रूप से, कि मसीह के पीछे चलने के लिये मैं हर एक बुराई और परीक्षा का सामना करने के लिये, हर एक त्याग और बलिदान करने के लिये तैयार हूँ। मसीह के पीछे चलने का अर्थ यह नहीं है, कि 'मुझे क्या मिलेगा?' पर इस बात से है कि, 'मैं मसीह के लिये क्या देने को तैयार हूँ?' और जब इस दृष्टिकोण को लेकर हम मसीह के पास आते हैं, तो हम जानते हैं कि जो हमें मसीह से मिलेगा, वह यह संसार नहीं दे सकता। क्योंकि मसीह में हमें आत्मिक शांति और आनन्द मिलता है। मसीह ने हमें मुक्ति और उद्धार देने के लिये अपने आप को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान दिया था, ताकि हमें उसके द्वारा पाप से छुटकारा और स्वर्ग में हमेशा की जिंदगी मिल जाए।

पर मसीह ने कहा था, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इंकार करके और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे आए। इसलिये यह विश्वास करना, कि कोई मनुष्य अपने जन्म से ही एक मसीही है, बिल्कुल गलत है। क्योंकि जब किसी का जन्म होता है, तो वह नन्हा बालक एक स्वर्गदूत की तरह पवित्र होता है। हो सकता है, उसके माता-पिता चरित्रहीन और पृथ्वी पर प्रत्येक पाप से जुड़े हुए हों, या चाहे वे बड़े ही अच्छे और चरित्रवान हों। पर जब एक बच्चा जन्म लेता है, तो उस में कोई पाप नहीं होता। पर वही बालक जब बड़ा हो जाता है, जब उसमें अच्छाई और बुराई को समझने की क्षमता आ जाती है, तो उस समय वह स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी बन जाता है। और तब यह आवश्यक है, कि वह यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाए, और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु मसीह की आज्ञानुसार जल के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा ले, जैसे कि बाइबल से हम सीखते हैं। (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:37, 38, 47; रोमियों 6:3-5)।

इसलिये यह विश्वास करना, कि जब एक बच्चा कुछ हफ्तों का हो जाए तो उसका बपतिस्मा करवाना चाहिए, बिल्कुल गलत है। यह बाइबल की शिक्षा नहीं है। बाइबल ऐसा नहीं सिखाती। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा छोटे बालकों के लिये नहीं है। किन्तु मसीह ने कहा था, जैसा कि हम मरकुस 16:16 में पढ़ते हैं, कि जो विश्वास

करके बपतिस्मा लेगा उद्धार उसी का होगा। लेकिन मनुष्यों ने मसीह की शिक्षा को उल्टा करके सिखाना और मानना आरंभ कर दिया है। वे कहते हैं, कि उद्धार पाने के लिए पहले बपतिस्मा दे दो, जब बच्चा छोटा हो, और बाद में बड़े होने पर उसे विश्वास करने की शिक्षा दो। हजारों और लाखों लोग आज भी ऐसा ही मान रहे हैं और ऐसा ही कर रहे हैं। पर यह बातें उन्होंने कहाँ से सीखी है? यह शिक्षा उन्होंने इंसानों से सीखी हैं, क्योंकि बाइबल ऐसा नहीं सिखाती है। और कितनी भयानक है यह शिक्षा, इस बात को हम इस प्रकार देखते हैं, कि जिन लोगों का बपतिस्मा उनके माता-पिता ने बालकपन में करवा दिया होता है, जब उन्हें सिखाया जाता है, कि बाइबल यह कहती है, कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में विश्वास करके उद्धार पाने के लिये और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। तो उनका जवाब यह होता है कि, ''हमारा बपतिस्मा तो बचपन में ही हमारे माता-पिता ने करवा दिया था।'' और इस कारण से वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से इंकार कर देते हैं।

सो यह बात बड़ी ही गंभीर है, कि जिन बातों को हम मानते हैं; जिन पर हम विश्वास करते हैं, उनका स्त्रोत क्या है, अर्थात् उन्हें हमने कहां से प्राप्त किया है और कहां से सीखा है? क्या वह परमेश्वर के वचन की शिक्षा है या मनुष्यों की शिक्षा है? क्योंकि प्रभु यीशु ने ऐसे लोगों के बारे में जो मनुष्यों की शिक्षाओं और विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं, मत्ती 15:9 में कहा था, कि वे लोग व्यर्थ में मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते हैं।

परमेश्वर ने सारी मानवता के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट कर दिया है। और यह मनुष्य का कर्त्तव्य है, कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चले। परमेश्वर किसी भी इंसान को अपनी इच्छा पर चलने के लिये अपनी बात को मानवाने के लिये मजबूर नहीं करता। उसने मनुष्य को बनाया है, और मनुष्य पर प्रकट किया है, कि वह उससे क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य को बताया है, कि आरंभ में उसने मनुष्य को पवित्र और पाप के बिना बनाया था। पर अपनी ही इच्छा से मनुष्य ने अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया है। और परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये क्या किया है? किस तरह से इंसान अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के योग्य, अर्थात् उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकता है? और यह कर्त्तव्य प्रत्येक मनुष्य का है कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चलकर अपनी जीवन यात्रा को पृथ्वी पर पूरा करे। क्योंकि परमेश्वर ने बाइबल में यह भी बताया है, कि एक दिन वह सब लोगों का न्याय करेगा; और वह न्याय वह उन्हीं बातों के आधार पर करेगा जिन्हें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में लिखवाकर हमें दिया है। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सारी मानवता पर प्रदर्शित किया है। और यही कारण है कि क्यों मैं बार-बार आपका ध्यान बाइबल में लिखी बातों पर दिलाता हूँ।

परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये हम सब को बुद्धि और शक्ति दें।

कलीसिया की सभाओं में आना

जे. सी. चोट

एक बहुत ही बड़ी तथा शोकजनक गलती एक मसीही व्यक्ति उस समय करता है जब वह कलीसिया की सभाओं में उपस्थित नहीं होता। प्रभु के प्रति विश्वासी बने रहने की आशा वह व्यक्ति कैसे रख सकता है जिसके मन में उसके प्रति इतना भी आदर नहीं है कि वह उसकी उपासना करने के लिये अन्य मसीही भाईयों के साथ एकत्रित हो? बात यह है, कि ऐसी परिस्थिति में वह विश्वासी सिद्ध नहीं हो सकता।

साम्प्रदायिक कलीसियाओं में आज जो लोग है उनमें से अधिकतर ऐसे हैं जो साल में केवल दो ही बार उपासना सभाओं में जाते हैं, अर्थात् बड़े दिन को तथा ईस्टर के दिन, जबकि बात यह है, कि परमेश्वर के वचन में इन दोनों ही दिनों के बारे में हमें कुछ नहीं मिलता। परन्तु तोभी पृथ्वी पर अनेकों ऐसे लोग हैं जो ऐसा सोचकर अपने आपको धोखा दे रहे हैं कि प्रभु को प्रसन्न करने के लिये केवल यही करना पर्याप्त है। वे प्रभु को क्या समझते है? परन्तु स्वयं अपने ही विषय में हम यह देखते हैं, कि कलीसिया में आज अनेक सदस्य ऐसे हैं जो उपासना में कभी-कभार ही आते है। और इसके लिये वे बहुत से बहाने बनाते है। या तो वे अपने किसी काम की वजह से नहीं आ पाते या फिर दूरी के कारण नहीं आते। या तो यह है, या वह है, या कुछ और बात है। परन्तु प्रश्न यह है, कि क्या इस प्रकार के बहानों को प्रभु स्वीकार करेगा? यहां ये लोग अपने आप को मसीही तो कहते हैं, परन्तु वे मसीह की उपासना करने को नहीं आते। दूसरी ओर हम देखते हैं, कि वे अपने अन्य कामों को करते हैं, काम करने के लिये उन्हें चाहे कितनी भी दूर जाना पड़े वे वहां अवश्य जाते हैं, और ऐसे ही अपने दूसरे कामों को भी करते है। अपने व्यक्तिगत कामों के लिये वे आराधना में नहीं आते।

जो लोग कलीसिया की सभाओं में नहीं आते उनमें से कुछ अकसर यूं कहते हैं, "लेकिन मैं अपने घर में प्रार्थना कर लेता हूं।" या ऑनलाईन आराधना कर लेता हूं परन्तु यदि प्रभु केवल यही चाहता तो यह ठीक हो सकता था। किन्तु, अपने लोगों से उसने विशेष रूप से यह कहा है कि वे सप्ताह के पहिले दिन को एक साथ इक्ट्ठे हो। इस प्रकार एकत्रित होकर उन्हें न केवल प्रार्थना ही करनी चाहिए, परन्तु वचन का अध्ययन करना, भजन गाना, प्रभु भोज में भाग लेना तथा अपने चंदे को भी देना चाहिए। पर जो लोग अपने ही घर में अपने आप उपासना करने का प्रयत्न करते हें, वे अपना चंदा किसे देते है? क्या वे प्रभु-भोज लेते हैं? नहीं। मुझे इस बात का निश्चय है कि इस प्रकार के लोग प्रभु के प्रति अपनी उपासना में, यदि कुछ करते हैं तो वे प्रार्थना करते हैं और बाइबल पढ़ लेते हैं, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं करते। परन्तु उन्हें इस बात को सीखने की आवश्यकता है कि उपासना में परमेश्वर से केवल प्रार्थना ही कर लेना पर्याप्त नहीं है।

यह सच है, कि कभी-कभी यह संभव हो सकता है, कि कई मसीही लोग बीमारी या अन्य किसी कारण से उपासना सभा में न आ सके। ऐसी परिस्थिति में, उपस्थित न होने के किसी को कोई बहाना बनाने की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु उसका एक खास कारण होता है। और उपस्थित न होने के ऐसे कारण को प्रभु स्वीकार करेगा। परन्तु वह किसी बहाने को स्वीकार नहीं करेगा।

परन्तु अब आईए हम इस बात को देखें कि सभाओं में आने के संबंध में स्वयं पवित्र शास्त्र में क्या लिखा है। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, "अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है। और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिए एक दूसरी की चिंता किया करे। और एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़े, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहे, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक वाट जोहना और आग का ज्वलन, बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।" (इब्रानियों 10:23-27)। अब निम्नलिखित विशेष बातों पर ध्यान दें:

1. हमें उसके प्रति विश्वासी रहना चाहिए क्योंकि परमेश्वर सच्चा है और हम से विश्वासघात नहीं करता।
2. हमें आपस में एक-दूसरे को भले कामों को करने के लिए उस्काना चाहिए।
3. हमें एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना नहीं छोड़ना चाहिए। कुछ लोग उस समय इक्ट्ठा होना छोड़ रहे थे तथा कुछ लोग आज भी छोड़ रहे हैं; परन्तु यह प्रभु की इच्छा नहीं है।
4. उस दिन को अर्थात प्रभु के दिन को या उपासना के दिन को पास आते देखकर हमें मंडली में एकत्रित होने के लिये एक दूसरे को बढ़ावा देना चाहिए या प्रोत्साहित करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि हमें उसके लिये अपने आप को तैयार करना चाहिए। इस तैयारी के लिये हमारे पास प्रत्येक सप्ताह में पूरा सप्ताह होता है।
5. हमें याद रखना चाहिए कि सच्चाई को जान लेने के बाद भी यदि हम जानबूझकर पाप करते हैं, तो हमारे पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं है, और ऐसी परिस्थिति में न्याय के दिन दण्ड पाने के विपरीत और किसी बात की आशा नहीं रखी जा सकती। अर्थात्, यदि हम जानबूझकर कलीसिया की सभाओं में नहीं जाते और उन सब कामों को नहीं करते जिनके विषय में हम यह जानते हैं कि उन्हें हमें करना चाहिए, तो प्रभु की आज्ञा पर न चलकर हम यह आशा कैसे रख सकते हैं कि वह हमारा उद्धार करेगा? इस कारण, यदि हम ऐसा ही जीवन व्यतीत करते रहेंगे तो हम अपने पाप के कारण नाश होंगे।

सो इन सब बातों से हम यही सीखते हैं कि प्रभु चाहता है कि हम कलीसिया की सभी सभाओं में भाग लिया करें, और यह एक गंभीर बात है, और खतरनाक भी

हो सकती है, यदि हम उसकी इस आज्ञा पर न चलें। परन्तु ऐसा करने को उस ने हम से क्यों कहा है? सभाओं में जाना क्यों आवश्यक है? इसके कई कारण हैं। उनमें से कुछ को यहाँ हम देखेंगे-

1. क्योंकि ऐसा करने की शिक्षा हमें आज्ञा और उदाहरण दोनों ही मिली है। इससे पूर्व इब्रानियों 10:25 से हमने देखा है कि वहां हमें यह चेतावनी मिली है कि हम एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें। फिर प्रेरितों 2:42 में हम पढ़ते हैं कि आरम्भ में मसीही लोग मिलकर उपासना करने में लौलीन रहे, और फिर प्रेरितों 20:7 से हम देखते हैं कि त्रोआस नामक स्थान पर पौलुस तथा अन्य मसीही लोग उपासना करने के लिये सप्ताह के पहिले दिन एकत्रित हुए। ठीक ऐसे ही हमें भी करना चाहिए।

2. हमें परमेश्वर की आराधना करने के लिये सभा में एकत्रित होना चाहिए। यूहन्ना 4:23, 24 में लिखा है, कि प्रभु यीशु ने कहा था कि परमेश्वर सच्चाई से आराधना करने वालों को ढूंढ़ता है और परमेश्वर आत्मा है इसलिये उसके उपासकों को उसकी उपासना आत्मा तथा सच्चाई से करनी चाहिए।

3. कलीसिया की सभाओं में एकत्रित होना प्रभु ने हमारे लिये इसलिये भी आवश्यक ठहराया है ताकि प्रभु-भोज में भाग लेकर हम उसे स्मरण किया करें। प्रभु-भोज के महत्व को दिखाने के लिये एक जगह पौलुस इस प्रकार कहता है, कि रोटी में से खाकर मसीह की देह को याद किया जाना चाहिए, और प्याले में से पीकर मसीह के लोहू को याद किया जाना चाहिए। (1 कुरिन्थियों 11:24, 25)। सो यदि ऐसा करने के लिये प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन में हम इक्ट्ठे नहीं होते हैं तो फिर हम प्रभु को उस प्रकार कैसे स्मरण कर सकते हैं जैसे कि वह चाहता है?

4. हमें इसलिये भी इक्ट्ठे होना आवश्यक है ताकि हम अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार अपने चंदों को दे सके। एक बार फिर से जब हम 1 कुरिन्थियों 16:2 पर ध्यान देते हैं तो हम देखते हैं कि पौलुस वहां कहता है कि सप्ताह के पहिले दिन जब हम एकत्रित होते हैं तो हम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार दे। परन्तु जब हम कलीसिया में नहीं आ पाते तो हमारे चंदों का क्या होता है? यदि बीमारी या किसी अन्य अवश्यक कारण से हम नहीं आ सके, तो हमें चाहिए कि अगले प्रभु के दिन जब हम कलीसिया में आते हैं तो अपने वर्तमान चंदे के साथ अपने पिछले चंदे को भी दें। किन्तु अधिकांश रूप से जो लोग कलीसिया में नहीं आते हैं वे अपने चंदे को भी नहीं दे पाते, और न केवल यही, परन्तु इस सम्बंध में किसी भी तरह के उत्तरदायित्व को अनुभव किए बिना वे बार-बार मंडली के अनुपस्थित रहते है।

5. प्रभु ने प्रतिज्ञा की है कि मन्डली में वह हमारे साथ होगा। उसकी प्रतिज्ञा को हम इस प्रकार पढ़ते हैं, 'क्योंकि जहां कहीं दो या तीन मेरे नाम पर इक्ट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूँ' वास्तव में इसी एक बात को ध्यान में रखकर कलीसिया की प्रत्येक उपासना सभा में हमें भाग लेना चाहिए क्योंकि प्रभु ने वहां उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की है। मान लीजिये यदि प्रधान मंत्री या कोई और विशेष व्यक्ति वहां आने वाला है तो क्या हम उपस्थित नहीं होंगे। परन्तु यहां स्वयं प्रभु कह

रहा है कि वह हमारे बीच में होगा- केवल एक बार नहीं, लेकिन हर एक बार। सो जहां उसने उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की है हम वहां उपस्थित होना अवश्य ही चाहेंगे।

6. अन्य लोगों के प्रति उदाहरण बनने के लिये भी हमारा उपासना सभाओं में उपस्थित होना आवश्यक है। हमारे परिवार है, संबंधि है, मित्र हैं, तथा जगत में अन्य अनेक लोग हैं जो हमें देखते हैं वे अगुवाई के लिये हमारे भीतर एक आदर्श को ढूंढ़ रहे हैं। हमें इस बात को अनुभव करना चाहिए और उन्हें सही मार्ग दिखाने का प्रयत्न करना चाहिए। कदाचित आप इस बात का अनुमान भी नहीं लगा सकते कि उनका उद्धार बहुत सीमा तक हमारे चाल-चलन पर निर्भर करता है। थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस अपनी पत्री में लिखकर कहता है, और तुम बड़े कलेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी प्रभु की सी चाल चलने लगे यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदार्श बने। (1 थिस्सलुनीकियों 1:6, 7)। क्या हम एक ऐसा आदर्श बन सकते हैं कि जब लोग हमारा अनुसरण करें तो वास्तव में वे मसीह का अनुसरण करने लगें? हमें ऐसा बनना चाहिए। सो अब कलीसिया की प्रत्येक सभा में उपस्थित होने का निश्चय कीजिए- समय पर पहुंचिए, शांत रहकर, भक्तिपूर्ण व्यवहार के साथ प्रभु की उपासना कीजिए।

7. हमें सभाओं में उपस्थित होना चाहिए, ताकि हमें व्यक्तिगत सामूहिक रूप से संगति मिल सके और हमारी आत्मिक उन्नति हो सके। यदि कलीसिया के सदस्य इक्ट्ठे न हों तो उस जगह या उस शहर में कलीसिया का महत्व क्या रहेगा? इक्ट्ठे न होकर वे एक-दूसरे से परिचित नहीं हो सकते। अपनी शक्ति को अनुभव नहीं कर सकते, वे किसी काम को करने की योजना नहीं बना सकते, आपस में एक-दूसरे की सहायता नहीं कर सकते और वे एक दूसरे को प्रोत्साहित नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में, कलीसिया का अधिकांश कार्य उसकी ताकत, उसके कामों का प्रतिफल, इत्यादि बहुत बड़े रूप में कलीसिया के एकत्रित होने पर ही निर्भर करता है। वास्तव में, यदि ऐसा न हो तो कलीसिया का अन्त हो जायेगा। इसी कारण हम बार-बार कलीसिया के एकत्रित होने के विषय में नए नियम में पढ़ते हैं, और पौलुस तथा अन्य मसीही भाई जहां कहीं भी गए वे वहां पर स्थानीय मण्डली के साथ एकत्रित हुए। हम यह भी देखते हैं कि यातनाओं के होते हुए भी कलीसिया के सदस्यों ने एकत्रित होने के लिये अवसर तथा उपाए निकाले। इसी तरह से आज भी यह उतना ही महत्वपूर्ण है कि प्रभु की उपासना करने के लिये तथा उसके कार्य को आगे बढ़ाने के लिये हम प्रत्येक बार निरंतर एकत्रित होते रहे।

सो ये कुछ ऐसे कारण हैं जिनसे हम सीखते हैं कि कलीसिया की सभाओं में एकत्रित होना कितना आवश्यक है। परन्तु हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कलीसिया में उपस्थित होने को हमें इस दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए कि महीने में एक बार या कभी-कभार ही कलीसिया में जाकर हम अपना कर्तव्य पूरा कर सकते है। किन्तु हमें प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन कलीसिया में उपस्थित होना चाहिए और इसी प्रकार कलीसिया की अन्य सभाओं में भी जाना चाहिए। पवित्र वचन में लिखा

है, और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, इसका तात्पर्य यह है कि जहाँ तक हम से हो सके हम कलीसिया की सारी सभाओं में उपस्थित हो। काश प्रभु हमारी सहायता करे कि हम अपने जीवनों में उपासना के महत्व को और अधिक बल दें ताकि कलीसिया की सभाओं में भाग लेकर उस के प्रति अपने अच्छे विश्वास को हम प्रकट कर सके। यदि उसके प्रति हम इस प्रकार विश्वासी रहेंगे तो अन्य बातों में भी उसके प्रति हम विश्वासी बने रहेंगे।

क्या स्त्री पुरुष से कम है?

बैटी बर्टन चोट

कुछ लोगों का मानना है कि स्त्री पुरुष की दासी से बढ़कर कुछ नहीं है, चाहे वह उसका पति ही है। उसका काम केवल बच्चे जनना, घर की देखभाल करना और खाना बनाना है। कई धर्मों में तो यह भी सिखाया जाता है कि स्त्री का उद्धार स्त्री रूप में नहीं हो सकता। उसे पुरुष के रूप में जन्म लेना अनिवार्य है।

इस विचार को नकारते हुए वुमेन लिब्रेशन मूवमेंट संसार के विकसित देशों में फैल गई है। यह मूवमेंट घोषणा करती है कि स्त्री हर प्रकार से पुरुष के बराबर है। यह लहर न केवल बराबरी को बनाना चाहती है, बल्कि इसका उद्देश्य पुरुषों के स्थापित अधिकार को दुरुस्त करने के लिए संसार की स्त्रियों के लिए शक्ति प्राप्त करना है। इस व्यवहार से स्त्रियों और पुरुषों के बीच भेदभाव की भावना बढ़ गई है, जो कि शत्रुता, कटुता और परिवारों के टूटने का कारण भी है।

आपको क्या लगता है कि इस व्यवहार में इतना बदलाव क्यों आया? क्या स्त्रियों के प्रति कुछ पुरुषों के व्यवहारों के कारण यह नकारात्मक प्रतिक्रिया हुइ होगी? क्या आपको लगता है कि संसार में जहां कहीं भी व्यवहार में ऐसा बदलाव पाया गया, वहां संस्कृति और सम्बंध प्रभावित हुए हैं?

हमारी दिलचस्पी यह जानने में है कि परमेश्वर स्त्री की भूमिका और पुरुष के साथ उसके संबंध के बारे में क्या कहता है? इसे न तो मूर्तिपूजक विचार और न ही लिब्रेशन मूवमेंट को परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त है? परन्तु बाइबल में से हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्त्री के काम, भूमिका और उसकी स्थिति को साफ देख सकते हैं।

क्या स्त्री पुरुष से कम है? बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति में हमें इस प्रश्न का उत्तर मिलता है। परमेश्वर ने जीव-जन्तुओं और पशुओं को बनाया और सबसे अन्त में उसने मनुष्य को सृजा। फिर वह उन्हें आदम के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या-क्या नाम रखता है; और जिस-जिस जीवित प्राणी का जो-जो नाम आदम

ने रखा, वही उसका नाम हो गया। सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखें, परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला, जो उस से मेल खा सके (उत्पत्ति 2:19, 20)।

कोई ऐसा सहायक जो उससे मेल खा सके शब्द बताते हैं कि परमेश्वर का इरादा स्त्री को अपने साथ मेल खाने वाले का साथी, यानी आदमी के जीवन के अनुभवों और जिम्मेदारियों में साथ देने के लिए एक सहायक बनाने का था।

स्त्री को अस्तित्व में लाने के लिए यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी संती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया (उत्पत्ति 2:21, 22)।

आदम ने जब उस स्त्री को जिसे परमेश्वर ने बनाया था, देखा तो उसने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है, सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गयी है। (उत्पत्ति 2:23)।

उत्पत्ति की पुस्तक में अन्तिम टिप्पणी है, इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे (आयत 24)।

सृष्टि के इस दृश्य के तथ्यों से हमें कई बातें पता चल सकती हैं-

- आदम को पहले बनाया गया था, इसलिए वह प्रथम अर्थात् स्त्री से पहले था।
- आदम को जहां भूमि की मिट्टी से बनाया गया था, वहीं स्त्री को आदम की पसली में से हड्डी लेकर बनाया गया था। इसलिए मूलतया वह पुरुष में से ही निकाली गई थी।
- हड्डी उसके सिर में से नहीं ली गई, ताकि कहीं वह उसके सिर पर न चढ़ जाए, न उसके पैर से ली गई ताकि पुरुष स्त्री को रौंद न डाले; उसके विपरीत हड्डी उसकी पसली में से ली गई थी ताकि वह उसके साथ उसकी सहयोगी हो।
- परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को मूलतया शारीरिक रूप में पूर्ण के दो अर्थ-भागों के रूप में बनाया। दोनों के मिलन के बिना मनुष्य जाति का प्रजनन नहीं हो सकता। इसलिए मनुष्य जाति को बनाए रखने में उनके योगदान के लिए दोनों का एक सा महत्व और आवश्यकता है।
- पुरुष और स्त्री के वयस्क मनुष्यों के रूप में, विवाह में आपस में एक-दूसरे के सपुर्द होने पर, आरंभ से परमेश्वर की योजना यह थी कि वे एक नई एकता में मिलकर रहें ताकि वे एक तन हो जाए। मैं फिर कहती हूं कि शारीरिक, भावात्मक और जीवन यापन में वे एक पूर्ण के दो अर्थ-भाग हैं।
- परमेश्वर की इच्छा थी कि पुरुष और स्त्री जो दो अलग-अलग व्यक्ति है, परिवार की एक नई इकाई को बनाने के लिए परिवार के अन्य सदस्यों को छोड़ दें।

उन कारणों पर विचार करें कि दम्पत्तियों को अपने माता-पिता से अलग क्यों रहना चाहिए। इन विचारों में जिम्मेदारी, परिपक्वता, एक दूसरे के साथ और उनके मिलन से होने वाली संतान के साथ लगाव, एक-दूसरे की सहायता करना और परिवार की भावना की बात को भी रखा जाए।

सो आरम्भ से ही परमेश्वर ने स्त्री को इसलिए बनाया ताकि पुरुष पूर्ण हो सके, अर्थात उसके साथ मिलकर वह उसकी सहायक बने। उनके जीवनों, उनके परिवार, उनके मा और परमेश्वर तथा अन्य मनुष्यों के साथ उनके संबंधों में बढ़ने में, स्त्री के साथ मेल खाने के लिए इस प्रकार से बनाया गया, ताकि उनके जीवन पूर्ण हों। सच्चाई यह है कि स्त्री मूलतया पुरुष में से ही निकली थी, यानि किसी भी प्रकार से गुण या महत्व में वह उससे कम नहीं है।

मिनिस्टर्स या सेवक - वे कौन है?

वायरन निकोल्स

आपने देखा होगा कि जिन लोगों को पहले प्रीचर/मुनाद (प्रचारक)। मुनादी करने वाला होने के कारण, (मुनाद) या गॉस्पल प्रीचर (सुसमाचार प्रचारक) कहा जाता था, आज वे आमतौर पर मिनिस्टर शब्द का इस्तेमाल करते हैं। समाचार पत्रों और मसीही प्रकाशनों के अधिकतर विज्ञापनों में टैलिफोन डायरेक्ट्री में चर्च बिलिडिंगों में, बिजनस कार्डो पर इंट्रोडक्शन देने में, बातचीत में देखा जा सकता है। कोई कह सकता है कि इसमें कोई प्रॉब्लम है क्या? मेरे विचार से तो है।

नये नियम में इस्तेमाल होने वाले और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद होने वाले मिनिस्टर शब्द हर यूनानी शब्द के विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है कि यह शब्द संज्ञा शब्द है या क्रिया शब्द। इतना कहना ही काफी है कि यूनानी शब्द आमतौर पर ऐसे व्यक्ति या सहायक, कर्मचारी या ऐसे व्यक्तियों के द्वारा की गई काम की अवधारणाओं को दर्शाते हैं। अन्य शब्दों में नये नियम के मिनिस्टर (सेवक) बुनियादी तौर पर सेवा के किसी काम के लगे लोग हुआ करते थे। नये नियम को सरसरी तौर पर पढ़ने पर भी इस तथ्य का पता चल जाता है कि हर मसीही, यानी मसीह के हर चेले के लिए मिनिस्टर यानी सेवक होना आवश्यक है। बात को छोटा रखने के लिए मैं रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 का हवाला देता हूं। इन अध्यायों में हमें साफ पता चलता है कि पूरी कलीसिया में अलग-अलग भाग हैं जो एक इकाई के रूप में कार्य करने, सेवा या काम करने या मिनिस्टिर होने के लिए बताए गए हैं। हर अंग का अपना अलग काम हैं परन्तु हर सदस्य को काम करना है। अपने हिस्से का काम करके कलीसिया अर्थात देह का हर अंग (सदस्य)

मिनिस्टर के रूप में काम कर रहा होता है।

कांग्रिगेशन का मिनिस्टर या कोई भी नाम हो, अधिकतर यह देखा गया है कि उस प्रचारक की पहचान मिनिस्टर के रूप में होती है। यदि हर मसीही मिनिस्टर है तो प्रचारक उस मण्डली का जिसमें वह काम करता है मुख्य मिनिस्टर नहीं है, नहीं तो उस मण्डली के दूसरे लोग वह नहीं बन पाते जो मसीह उनसे बनने की उम्मीद करता है। ऐसा संभव नहीं कि किसी मण्डली में केवल एक ही मिनिस्टर हो। यदि ऐसा नहीं हो भी जाए तो यह वह प्रचारक नहीं होगा जो मिनिस्टर था। यह उस मण्डली का कोई और व्यक्ति हो सकता है जो मसीह के सेवक होने का बाइबल के अनुसार पद पाने के अधिक योग्य बना है।

अंग्रेजी में मिनिस्टर, मिनिस्टरी और मिनिस्टरिंग शब्दों का इस्तेमाल नये नियम में अलग-अलग रूपों में हुआ है। यह बिल्कुल सही है कि मिनिस्टरों के रूप में प्रचारकों के कई हवाले हैं परन्तु जो प्रचारक नहीं है उन्हें भी मिनिस्टर कहना बिल्कुल सही और उपयुक्त है। यह ध्यान देने वाली बात है कि मसीही लोगों के अलग-अलग समूहों के लोगों को कई बार मिनिस्टर कहा गया। ऐसा ही एक मामला इब्रानियों 6:10 में मिलता है जहां लेखक मसीही लोगों की एक बड़ी मण्डली से बात कर रहा है और उनके दूसरे लोगों की सेवा कही होने की बात करता है। मसीही लोगों के एक बड़े और अलग समूह को लिखते हुए पतरस ने उन सब से बढ़कर सेवा करनी (मिनिस्टरिंग) की बात की (1 पतरस 4:10)। रोमियों 15:27 में पौलुस ने बताया कि मकिदूनिया और अखाया में अन्यजातियों से बने मसीही लोगों ने यरूशलेम के निर्धन और यहूदी मसीहियों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मदद करने के लिए अपना धन देकर मिनिस्टरों (सेवकों) के रूप में सेवा करनी थी। नये नियम में महिलाओं को साफ़-साफ़ मिनिस्टिर या सेवक बताया गया है। उनके उदाहरणों में मत्ती 8:15 में पतरस की सास, मत्ती 27 में कई महिलाएं और लूका 8:3 में कई महिलाएं हैं।

यह जानना दिलचस्प है कि लोग बिना जाने भी मिनिस्टर हो सकते हैं। पौलुस ने हमें बताया कि सरकारी अधिकारी असल में परमेश्वर के सेवक (मिनिस्टर) हैं (रोमियों 13:1-7)। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कुछ लोगों को इस तथ्य का पता नहीं है पर फिर भी है यह सच।

कुछ अपवादों के साथ नया नियम सब मसीहियों को शमिल करते हुए विस्तृत अर्थ में सेवकों और सेवकाई करने की बात करता है, केवल उन्हीं की नहीं जो मुख्य रूप में वचन के प्रचार की सेवा करते हैं। हर मसीही के लिए मिनिस्टर या सेवक होना आवश्यक है। नर हो या नारी, बच्चे हो या बूढ़े बहुत अधिक गुणी हो या कम गुणी, हर किसी के हर प्रकार से जो परमेश्वर को स्वीकृत है और परमेश्वर की इच्छा को समर्पित हो सेवा करना (मिनिस्टर होना) आवश्यक है। वचन के सामान्य अर्थ में हम में से हर कोई प्रचारक नहीं बन पाएगा, और इसमें कोई बुराई भी नहीं है, परन्तु हर मसीही के लिए मसीह का और मसीह के लिए मिनिस्टर यानी सेवक होना आवश्यक है।

प्रचारक को मिनिस्टर कहना बेशक न तो बाइबल के उलट हैं, और न यह गलत है क्योंकि वह एक सेवक है। परन्तु जो लोग सचमुच में मसीही हैं, वे सब के सब मिनिस्टिर हैं। तो क्या समझ या समझदारी के साथ बाइबल से अधिक मेल खाता यह नहीं होगा कि मिनिस्टर शब्द को केवल उन्हीं तक सीमित न किया जाए जो वचन सुनाने की सेवा देते है?

फिर से, यह सही है कि यूनानी भाषा में अलग-अलग शब्द है। जिनका अनुवाद नये नियम में सेवक (अंग्रेजी में मिनिस्टर) किया गया है और कई बार ये अंतर बहुत कम होते हैं। परन्तु नये नियम में किसी व्यक्ति के या किसी कारण मिनिस्टिर (या सेवक) के इस्तेमाल को संक्षिप्त करना भी सही है। प्रभु करे कि हर मसीही प्रभु की सेवा उसके विश्वासी सेवक के रूप में करने में लगा रहे।

यीशु को दण्डवत करना

रे हॉक

यूहन्ना की पुस्तक के आरंभ में आपको यीशु के स्वभाव और पूर्व अस्तित्व में होने का पता चलता है। आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया (यूहन्ना 1:1, 14)।

यीशु परमेश्वर है, इसलिए परमेश्वर के रूप में उसे दण्डवत किया गया या उसकी आराधना की गई। पूर्व देश से उसके दर्शन के लिए आए पण्डितों (विद्वानों) ने पूछा था, यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए है (मत्ती 2:2)। बाद में जब वे उस घर में पहुंचे जहां यीशु था, तो उन्होंने मुंह के बल गिरकर बालक को प्रणाम किया, और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना और लोबान, और गंधरस की भेंट चढ़ाई (मत्ती 2:11)।

किसी को भी यीशु की उपासना क्यों करनी चाहिए? यीशु ने अपनी परिक्षा किए जाने के समय शैतान से कहा था, तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर (मत्ती 4:10)। क्या यीशु परमेश्वर है? यदि नहीं तो हमें उसे दण्डवत नहीं करना चाहिए और न ही हम कर सकते हैं। यदि वह परमेश्वर है तो न केवल हम उसे दण्डवत कर सकते हैं बल्कि हमारा फर्ज है कि हम उसे दण्डवत करें।

अगर यीशु परमेश्वर है तो वह उसकी की जाने वाली उपासना को स्वीकार करेगा। यदि वह परमेश्वर नहीं है, तो उस आदर को जिसका हक्कदार केवल परमेश्वर है, उसे देना परमेश्वर की निंदा करना होगा। पहली सदी के लोगों ने यीशु को परमेश्वर मानकर उसे दण्डवत क्यों किया, जबकि आज के कुछ लोग जो उसके लोग होने का

दावा करते हैं, ऐसा करने से इंकार करते हैं। कुछ तो इस हद तक चले गए हैं कि उन्होंने गीतों की अपनी पुस्तकों में से ऐसे किसी भी सम्बोधन को निकाल दिया है, जिसमें सीधे तौर पर यीशु की आराधना की बात हो।

पहली सदी में एक कोढ़ी ने उसके पास आकर उसे प्रणाम किया (मत्ती 8 :2)। उस कोढ़ी के मन में कोई उलझन नहीं थी, क्योंकि इस प्रणाम किए जाने में वह अकेला नहीं था। एक और अवसर पर एक सरदार ने भी ऐसा किया था (मत्ती 9:18)। असल में उसे दण्डवत करने वालों में से एक ने एक बार उससे कहा था कि सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 14:33)। एक अन्य अवसर पर एक स्त्री ने यीशु को प्रणाम करके उससे सहायता मांगी थी (मत्ती 15:25)। ध्यान दें कि उसने उससे वैसे ही विनती की थी, जैसे हम प्रार्थना में किया करते हैं। और लोगों ने भी उसे दण्डवत किया था (मत्ती 12:36; 20:20)।

मुर्दों में जी उठने के बाद यीशु कुछ शिष्यों से मिला और उन्होंने झुककर उसके पांवों में पड़कर उसे प्रणाम किया था (लूका 24:52)।

इब्रानियों की पुस्तक के आरंभ में हम देखते हैं कि साफ लिखा है, क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ? और फिर यह, मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा? और जब पहिलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करे।

और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है। परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है (इब्रानियों 1:4-8)।

परमेश्वर को कितनी बार कहने की आवश्यकता है कि ऐसा ही है? एक ही बार। कलीसिया के आरंभ के बाद इक्ट्ठा होकर रोटी तोड़ने के लिए आने के हमें कितने उदाहरण मिलते हैं? एक ही, एक उदाहरण को नमूने के रूप में लेकर, हम यीशु द्वारा प्रणाम या दण्डवत को स्वीकार करने के इतने उदाहरणों को अनदेखा कैसे कर सकते हैं? यदि पहली सदी के लोग और स्वर्गदूतों के लिए यीशु को दण्डवत करना या उसकी आराधना करना सही था तो आज हमारे लिए भी सही है। यदि नहीं तो क्यों नहीं?

वह मेरा प्रभु है। थोमा पुकार उठा था, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर। (यूहन्ना 20:28)। क्या वह आपका प्रभु है?

वह मेरा राजा है। वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है (1 तीमुथियुस 5:15; प्रकाशितवाक्य 17:14; 14:19)। क्या वह आपका राजा है?

वह मेरा उद्धारकर्त्ता है (लूका 2:11; यूहन्ना 4:42; प्रेरितों 5:31; इफिसियों 5:23; तीतुस)। क्या वह आपका उद्धारकर्ता है?

वह मेरा सिर है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:8-24)। क्या वह आपका सिर है?

वह मेरा परमेश्वर है (यूहन्ना 10:28; तीतुस 2:13)? क्या वह आपका परमेश्वर है?

वह मेरा महायाजक है (इब्रानियों 3:1; 4:14; 5:5; 6:20; 9:11)। क्या वह आपका महायाजक है?

वह मेरा पति है, क्योंकि मैं उसकी दुल्हन या पत्नी अर्थात कलीसिया में हूं (रोमियों 7:4; प्रकाशितवाक्य 21:2, 9)। क्या आप उससे ब्याहे गए हैं?

उसने मुझे अपने लहू से खरीदा (प्रेरितों 20:28)। क्या उसने आपको खरीदा है?

मुझे लगता है कि प्रेरितों के लिए यीशु को दण्डवत करना सही था। यह बात मुझे आज उसकी आराधना करने के लिए अधिकार के रूप में प्रेरितों का स्वीकृत उदाहरण देती है।

हे प्रभु यीशु, मुझ से प्रेम करने और मेरा उद्धार करने के लिए धन्यवाद।

हर प्रकार की आत्मिक आशिषें और कलीसिया का उद्देश्य (इफि. 1:3-14)

जे. लाकहर्ट

अपने भाइयों के नाम पत्र का आरम्भ करते हुए पौलुस ने "मसीह में" असीमित आशिषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया (1:3-14)। यूनानी भाषा के नये नियम में एक ही वाक्य में पौलुस ने पवित्र लोगों के लिए हर प्रकार की आशिषें देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की और इन आशिषों में से सात (सम्पूर्णता को दर्शाता हुआ अंक) के लगभग आशिषें गिनवाई। हर आशीष परमेश्वर को महिमा देने के लिए बताई गई है (देखें 1:6, 12, 14)। मनुष्य के उद्धार के सम्पूर्ण कार्य के लिए स्तुति में पौलुस ने सम्पूर्ण परमेश्वरत्व को शामिल किया। उसका स्तुतिगान परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में केन्द्रित था। क्योंकि परमेश्वर की मंशा में तीनों ही शामिल हैं।

मसीह में चुने हुए (1:3, 4)

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशिष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

आयत 3. हमारे प्रभु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो। ये शब्द पौलुस के स्तुतिगान का, जो आयत 14 तक जारी रहता है आरंभ हैं। धन्यवाद हो और विशेष रूप से परमेश्वर के लिए लागू होता है, मनुष्य पर कभी नहीं। यह इस प्रकार से मनुष्य के लिए नहीं हो सकता। परमेश्वर मनुष्य के लिए अपने बड़े उद्देश्य के कारण, जिसकी बात पौलुस इस आयत में करने लगा, हमारी स्तुति के योग्य है।

परमेश्वर को हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता कहा गया है जो कि थोड़ा अटपटा है। यीशु आमतौर पर परमेश्वर को 'मेरा पिता' कहता था परन्तु उसने उसे मेरा परमेश्वर बहुत कम कहा (देखें 27:46; यूहन्ना 20:17)। पौलुस ने यहां पर दोनों ही पदनामों हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता का इस्तेमाल किया। अपने लिए हो या अपने चेलों के लिए यीशु ने हमारा परमेश्वर या हमारा पिता कभी नहीं कहा। क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका संबंध निराला है। नमूने की प्रार्थना में यह एक अपवाद लगता है, क्योंकि यह चेलों ने की थी न कि यह यीशु की प्रार्थना थी (मत्ती 6:9)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार की भूमिका (1:1-8) में कहा गया है कि देहधारी होने वाला वचन आदि में पहले से था। इस के अलावा वह वचन परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हुए, परमेश्वर के साथ था। (वह परमेश्वर के साथ आमने-सामने था और उसके साथ उस की सक्रिय सहभागिता थी)। वचन परमेश्वर था। (वह एक ईश्वर या परमेश्वर नहीं बल्कि परमेश्वर था जिस में सभी ईश्वरीय गुण थे)। फिलिप्पियों 2 ने मसीह को परमेश्वर के स्वरूप में होने के रूप में दिखाते हुए मसीह के स्वभाव को बताया (आयत 6)। स्वरूप शब्द परमेश्वर के गहरे अतिस्तत्व में यानी जो कुछ वह अपने आप में हैं, यीशु उसी स्वभाव में बना रहा जो अपने देहधारी होने से पहले उसका था। ईश्वरीयता का स्तंभ होने के कारण मसीह में परमेश्वर के साथ बराबरी पर विचार नहीं किया जिसे पाने का उसे अधिकार था। यह जो परमेश्वर के तुल्य था, इसने अपने आपको स्वर्ग की महिमा से खाली कर लिया और थोड़ी देर के लिए शरीर में आ गया और ईश्वरीयता और मनुष्यता का सम्पूर्ण मेल बन गया।

यीशु परमेश्वर है, तो फिर परमेश्वर किस अर्थ में उसका परमेश्वर है? मसीह के मानवीय स्वभाव के अनुसार परमेश्वर उसका परमेश्वर है। मसीह के काम के द्वारा वह हमारा भी परमेश्वर है। पूरे अनन्तकाल से लेकर, परमेश्वर उसका पिता है जो देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया (यूहन्ना 1:14)। यीशु हमारा प्रभु है इस कारण परमेश्वर हमारा भी पिता है, क्योंकि गोद लिए जाने के द्वारा हम उसकी संतान बन जाते हैं (देखें इफिसियों 1:5)। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु और पिता के रूप में परमेश्वर के बीच का संबंध निराला है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह की आश्चर्यकर्म के द्वारा गर्भ में आने और मुर्दों में से जी उठने के द्वारा पुत्र नाम दिया गया था (लूका 1:35; रोमियों 1:3, 4)। पिता के साथ उसका संबंध निराला था, क्योंकि वह पिता का अकेला इकलौता था (यूहन्ना 1:14, 18)। इब्रानियों का लेख भजन संहिता 2:7 में से दोहराता है, तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ, इसे बहुत संभव यीशु हमारे प्रभु के जन्म से मिलाता है (इब्रानियों 1:5)। पौलुस ने अन्ताकियां में यहूदियों को दिए गए अपने उपदेश में इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया और इसे पुनरुत्थान के साथ जोड़ा (प्रेरितों 13:33)। फिर इब्रानियों का लेखक पुत्रत्व को आश्चर्यकर्म के द्वारा उसके गर्भ में आने के तथ्य से जोड़ता है; प्रेरितों के काम की पुस्तक इसका प्रमाण है।

यीशु परमेश्वर का इकलौता पुत्र (1 यूहन्ना 4:9) इस अर्थ में है कि अनन्तकाल से पिता के साथ केवल उसी का अस्तित्व था और फिर उसने जैसा वह था एक कुंवारी से जन्म लिया। यीशु ने इस विलक्षण अस्तित्व की ओर संकेत किया, जब उसने मरियम से कहा, मुझे मत छू क्योंकि अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं (यूहन्ना 20:17)। मसीह के मनुष्य होने से क्रूस पर से पुकारा, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? (मत्ती 23:46); परन्तु उसके ईश्वरीय भाग ने कहा, हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं (लूका 23:46)।

आयत 3. परमेश्वर सब लोगों को शारीरिक आशीषें देता है क्योंकि वह सब प्राणियों को आहार देता है। (भजन संहिता 136:25) और (भजन संहिता 136:25) और क्योंकि वह धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा बरसाता है (मत्ती 5:45)। परन्तु आत्मिक आशीष उन्हीं के लिए है जो मसीह में है। ये आत्मिक आशिषें लोगों के लिए हैं, जो आत्मिक क्षेत्र में रहते हैं क्योंकि गोद लिया जाना मसीही लोगों को मसीह में रहने के योग्य बनाता है। (मसीह में होने की आशिषें और लाभ वाला चार्ट)।

स्वर्गीय स्थानों में जहां ये आशिषें मिलनी हैं और मूल में यह स्वर्गीय ही है, जिसमें स्थानों शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। इफिसियों में यह शब्द पांच बार मिलता है (1:3, 20; 2:6; 3:10; 6:12) वह भी केवल पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया है, जिसने कहा कि स्वर्गीय वहां हैं, जहां मसीह कलीसिया के सिर के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (1:20-22)। स्वर्गीय वहां है, जहां जो मसीह में उसके साथ हैं (2:6) जहां कलीसिया परमेश्वर का ज्ञान प्रकट करती हैं (3:10) और जहां हम बुराई की आत्मिक शक्तियों से लड़ते हैं (6:12)। यह शब्द अधिकतर परमेश्वर के निवास को पूरे आत्मिक क्षेत्र के रूप में नहीं बताता। स्वर्गीय ही हैं जहां परमेश्वर उनको जो मसीह में है अनुग्रहपूर्वक सब प्रकार की आत्मिक आशिषें देता हैं।

आयत 4. पहली आत्मिक आशीष जिसका उल्लेख किया गया है वह यह है कि उसने हमें उसमें चुन लिया। चुन लिया जिसका अर्थ है 'चुनना'। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल हर जगह मध्य स्वर में किया गया है, जिसका अर्थ है, 'किसी व्यक्ति/वस्तु को अपने लिए चुने। इस आयत में चुनने वाला परमेश्वर है; वह अपने लिए चुनता है, या ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए उसकी एक प्राथमिकता है। जिस प्रकार से परमेश्वर ने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए इस्राएल को चुना (प्रेरितों 13:17) और मसीह ने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए प्रेरितों को चुना (लूका 6:13; यूहन्ना 15:16-19), वैसे ही परमेश्वर ने हमें अर्थात् पौलुस और उन सब पवित्र लोगों को जो मसीह में विश्वासी है; 1:1 ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए चुना है। परमेश्वर का यह चयन जान-बूझकर किसी को अनन्त जीवन के लिए और अन्यों को अनन्त मृत्यु के लिए चुना है? निश्चय ही अपनी सम्प्रभुता में परमेश्वर अपने लिए कुछ काम करने के लिए किसी विशेष व्यक्ति को चुन सकता है। उसने इस्राएल जाति का पिता होने के लिए किसी और को चुनने

के बजाय अब्राहम को चुन लिया। मसीहा की वंशावली में होने के लिए उसने एसाव के स्थान पर याकूब को चुन लिया और मसीहा को लाने के लिए उसने अन्य जातियों को छोड़ इस्राएल को चुन लिया। विशेष कार्यों को पूरा करने के लिए विशेष लोगों को चुनने का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर को दूसरों की परवाह नहीं हैं।

इसी प्रकार से परमेश्वर ने अलग-अलग लोगों को अलग-अलग गुण या योग्यताएं दी हैं। कौन कहेगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह गुण देता है? कौन संदेह करेगा? परन्तु अनन्त उद्धार के मामले में परमेश्वर मनमानी करके यह आदेश नहीं देता कि कुछ लोगों का उद्धार हो जाए और अन्य लोग चाहे जो करें या जो चाहे करने से बचें, उनका नाश ही होगा। परमेश्वर उद्धार की पेशकश सबके लिए करता है (तीतुस 2:11); जिसमें सबको परमेश्वर के पास आकर उसके अनुग्रह को स्वीकार करने को कहा जाता है (देखें मत्ती 11:28; प्रकाशित वाक्य 22:17)। मसीह में चुने हुए लोगों में होने या न होने की पसन्द प्रत्येक व्यक्ति की अपनी है। परमेश्वर ने आदेश दिया है कि मसीह में सब लोग उद्धार पाएं, परन्तु वह हमें पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में मसीह में बपतिस्मा लेने का निर्णय लेने या न लेने की अनुमति देता है (रोमियों 6:3)। सुसमाचार की आज्ञा मानने वाला व्यक्ति मसीह में है और चुने हुए लोगों में है। पतरस उनकी बात करता है जो परमेश्वर पिता के भविष्ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लोहू छिड़के जाने के लिए चुने गए हैं (1 पतरस 1:1, 2)।

चुने गए लोग मसीह की आज्ञा मानना चुनते हैं। जब कोई व्यक्ति मसीह की आज्ञा मानने को चुनता है तो वह चुने हुए लोगों में आ जाता है। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि यदि परमेश्वर जानने का निर्णय करे तो उसमें जानने की योग्यता है कि कौन-कौन उद्धार पाएगा ओर कौन-कौन नाश होगा; परन्तु परमेश्वर के मनमाने ढंग से यह तय करने की अवधारणा कि कौन स्वर्ग में जाएगा और किसे नरक में फैंका जाएगा, बाइबल की नहीं है। पवित्र शास्त्र मनुष्य की स्वतंत्रता पर जोर देता है। डी.एल. मूडी ने कहा है, जो कोई भी चाहता है वह चुना हुआ है और जो नहीं चाहता वह नहीं चुना हुआ है।

परमेश्वर ने यह चुन लिया है कि वे सब लोग जो मसीह में है, छुड़ाए जाएं और इस प्रकार परमेश्वर द्वारा यह चुना जाना जगत की उत्पत्ति से पहले हो गया था। यह परमेश्वर के एक संसार को जिसका पहले कोई अस्तित्व नहीं था अस्तित्व में लाने की बात है। जगत उपर्युक्त और सुसंगत प्रबंध या रचना व्यवस्था का संकेत देता है। इसलिए जब पौलुस ने जगत की उत्पत्ति से पहले शब्दों का इस्तेमाल किया तो उस के कहने का अर्थ परमेश्वर के कार्य के द्वारा रखे गए व्यवस्थित संसार से पहले था। यह वाक्य यूनानी नये नियम में कम से कम दस बार मिलता है और जहां-जहां यह पाया जाता है, वहां से यह स्पष्ट हो जाता है कि जगत की उत्पत्ति से पहले का अर्थ संसार और माननीय इतिहास के आरंभ से पहले है।

इस क्षेत्र में समय से पूर्व, पिता द्वारा पुत्र से प्रेम किया गया (यूनाना 17:24) और हमारे लिए अपना पवित्र लहू बहाने के लिए ठहराया गया था। वह जगत की उत्पत्ति से पहले (देखें मत्ती 13:35; 25:34; लूका 11:50; इब्रानियों 4:3; 9:26; प्रकाशितवाक्य 17:8) वध किया हुआ मेमना था (प्रकाशितवाक्य 13:8)। मसीह में परमेश्वर की योजना संसार के होने से बहुत पहले उसके मन में थी।

यह योजना सनातन, अपरिवर्तिनीय और व्यापक है। यहां पर पौलुस की बात उसके पाठकों को इस ज्ञान से सांत्वना और प्रोत्साहन देने के लिए कही गई होगी कि वे अनन्तकाल से परमेश्वर के मन में थे। पौलुस ने यह बात सृष्टिकर्त्ता का धन्यवाद और स्तुति करने के संदर्भ में कही, जो सब प्रकार की आत्मिक आशिषें देने वाला है।

आयात 4. परमेश्वर ने हमें आशीष दी है और हमें अपने लोग बना लिया है ताकि हम उस के निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोश हों। आयत 1 में पौलुस ने अपने पाठकों को पवित्र लोग कहा, पर यहां उसने संकेत दिया कि मसीही लोग पवित्र हैं जो कि यूनानी भाषा में वही शब्द है। पहला हवाला मसीह में होने वालों की परमेश्वर के सामने स्थिति का है और दूसरा उस नैतिक स्थिति का संकेत देता है, जो ऐसी स्थिति से जुड़ा है। परमेश्वर ने कहा, पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूं (1 पतरस 1:16)। निर्दोष होना बिना दोष के या बिना कमी से मुक्त होना, दान या दोष रहित बलि के पशु की तरह है (लैव्यव्यवस्था 22:21)।

एक अर्थ में मानवीय जीव वैसे पवित्र नहीं हो सकते जैसे परमेश्वर पवित्र या बिना दोष के जिस में कोई दाग नहीं है (1 यूहन्ना 1:8)। मसीह हमारा सिद्ध नमूना है ओर मसीही लोगों को उस नमूने की ओर चलना चाहिए (1 पतरस 2:21); परन्तु सब लोग मसीह जैसे बनकर उस लक्ष्य से चूक जाते हैं। बेशक मसीही लोगों की कमी किसी भी प्रकार से इस तथ्य को नकार नहीं देती कि हमें पवित्र और निर्दोष जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। जब हम परमेश्वर की ज्योति में चलने की इच्छा करते हैं तो यीशु का लहू हमें हर प्रकार के पाप से शुद्ध कर देता है (1 यूहन्ना 1:7-9)।

एक और महत्वपूर्ण अर्थ में, मसीही व्यक्ति पवित्र और दोष रहित है क्योंकि वह मसीह में है। परमेश्वर ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले चुन लिया। ताकि हम उसके निकट पवित्र और निर्दोष हो। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने हमें उसमें इसलिए चुन लिया ताकि वह हमें पवित्र और निर्दोष देख सके, क्योंकि हम मसीह में हैं। अपने पाप में हम अपवित्र, अधर्मी और खोए हुए हैं। हमारे अन्दर ऐसा कुछ नहीं है, जिससे हम अपने आपको परमेश्वर के सामने सराहें। जो लोग पाप में जीवन बिताते हैं उनमें कोई धार्मिकता नहीं है (रोमियों 6:20)। धन्य वचनों में यीशु ने मन के दीनों अर्थात अपनी आत्मिक दरिद्रता को पहचान लेने वालों पर आशीष दी है। (मत्ती 5:3)।

मसीह में सब कुछ बदल जाता है। हम में अपने आप में कोई धार्मिकता नहीं है, इस कारण मसीह हमारी धार्मिकता है (1 कुरिन्थियों 1:30)। जब हमने सुसमाचार की

आज्ञा मानी है तो हम धर्म के दास बन गए हैं (रोमियों 6:17, 18)। मसीह की दुल्हन को कलीसिया की धार्मिकता का लिबास पहनाया गया है, क्योंकि उसके वस्त्र मसीह के लहू में धो दिए गए (प्रकाशितवाकय 7:14; देखें 19:8)। मसीह में बपतिस्मा लेने पर हमने वस्त्र के रूप में मसीह को पहन लिया। और इस कारण अब हमने उसकी धार्मिकता को पहन लिया है (गलातियों 3:27)। मसीह में प्रवेश करने पर अनुग्रहकारी परमेश्वर ने हम पर धार्मिकता, पवित्रता और निर्दोषता मढ़ दी।

जब हम परमेश्वर के निकट खड़े होते हैं तो वह हमें हमारी सब मानवीय त्रुटियों के द्वारा हमारी आत्माओं में देखता है और उस पवित्रता और निर्दोषता से संतुष्ट हो जाता है, जो मसीह में होने के कारण हमें मिली है।

मसीही जीवन

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

एक मसीही बन जाने के बाद आवश्यक है कि आप प्रभु में होकर एक पवित्र जीवन बिताएं। यदि कोई प्रभु को छोड़कर फिर से वैसा ही सांसारिक जीवन व्यतीत करने लगता है जैसा मसीही बनने से पहले था, तो वोह अपने उद्धार से वंचित हो सकता है। कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि एक बार उद्धार पा लेने के बाद चाहे कोई कैसा भी जीवन बिताए वोह अपने उद्धार से कभी भी वंचित नहीं हो सकता, अर्थात एक बार बच गए तो सदा के लिये बच गए, चाहे कुछ भी करो। परन्तु बाइबल की शिक्षा के प्रकाश में ऐसी धारणा बिल्कुल ग़लत है (1 कुरिन्थियों 9:27; 10:5-12 गलतियों 5:1-4; 1 तीमुथियुस 4:1, 16; 2 तीमुथियुस 4:10; इब्रानियों 3:12; 6:4-8; याकूब 5:19-20; 2 पतरस 2:20-22; प्रकाशित. 2:4-5; लूका 8:11-15; यूहन्ना 15:1-14)। यदि ऐसा सच होता कि उद्धार पाने के बाद मनुष्य अपने उद्धार से कभी भी वंचित नहीं हो सकता, तो फिर एक मसीही बनने के बाद परमेश्वर का भय मानकर पवित्र जीवन निर्वाह करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परमेश्वर का अनुग्रह केवल उद्धार देने के लिए ही प्रकट नहीं हुआ था, पर हमारे जीवनों को बेहतर और अच्छा बनाने के लिये भी प्रकट हुआ था। जैसा कि पौलुस ने कहा था: "क्योंकि परमेश्वर का वोह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मुख फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं" (तीतुस 2:11-12)।

सो जब कोई व्यक्ति एक मसीही बन जाता है, तो उसे कैसा जीवन बिताना चाहिए? पहली शताब्दी में अकसर मसीही लोगों को एक "मार्ग" पर चलनेवाले लोग कहा जाता था। (प्रेरितों 9:2; 19:9, 23; 22:4; 24:14, 22)। "मार्ग" शब्द का

उपयोग मसीही लोगों को सम्बोधित करने के लिये इसलिये किया जाता था क्योंकि वे लोग एक ऐसा जीवन बिताते थे जो अन्य सभी लोगों से भिन्न, अलग और निराला था। प्रभु यीशु ने कहा था कि, "मार्ग मैं हूं" (यूहन्ना 14:6)। अर्थात वोह स्वर्ग में प्रवेश करने का मार्ग है। यीशु की शिक्षाओं को मानकर चलना ही उस "मार्ग" पर चलना है। यीशु ने शिक्षा देकर कहा था कि दो प्रकार के मार्ग हैं, एक संसार का और एक प्रभु का। एक मार्ग वोह है जो मनुष्य को नरक की ओर ले जाता है, और एक मार्ग ऐसा है जो मनुष्य को स्वर्ग में ले जाएगा। मसीही जीवन "धार्मिकता का मार्ग" है। (2 पतरस 2:21; मत्ती 7:13-14; लूका 13:23-24)।

क्योंकि मसीही जीवन एक विशेष "मार्ग" का जीवन है, इसलिये उस विशेष मार्ग पर चलने का ढंग भी अलग है। प्रेरित यूहन्ना ने इस सम्बन्ध में लिखकर यूं कहा था: "इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं: जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसे ही चले जैसे वोह चलता था।" (1 यूहन्ना 2:6)। एक मसीही का चाल-चलन सांसारिक और अपवित्र नहीं होना चाहिए (रोमियों 8:4; इफिसियों 2:1-2; 4:17; कुलुस्सियों 3: 5-7; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 11; 1 यूहन्ना 1:6; 2:11)। पर जैसा कि बाइबल में लिखा है, उसे परमेश्वर के आत्मा के कहे अनुसार और प्रकाश में और सच्चाई में चलना चाहिए। (रोमियों 8:4; 2 कुरिन्थियों 5:7; गलतियों 5:16; इफिसियों 2:10; 4:1; 5:2,8, 15; कुलुस्सियों 1:10; 2:6; 4:5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 1 यूहन्ना 1:7; 2 यूहन्ना 4,6; 3 यूहन्ना 3,4)।

एक मसीही व्यक्ति का चाल-चलन, और उसका आचरण मसीह में उसकी "बुलाहट" के अनुसार होना चाहिए। एक मसीही बनने पर, मनुष्य को अपने अधर्म के जीवन से जो पहले था मन फिराकर (इफिसियों 4:22), मसीह यीशु में एक नया जीवन बिताना चाहिए। (1 तीमुथियुस 4:12; याकूब 3:13; 1 पतरस 1:15; 2:12; 3:1-2, 16; 2 पतरस 3:11)। पौलुस ने इफिसुस में रहनेवाले मसीही लोगों से कहा था, "कि तुम पिछले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार डालो। (इफिसियों 4:22; कुलुस्सियों 3:5-9)। और फिर उसने कहा था, कि "नए मनुष्यत्व को पहन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। (इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 3:10)। मसीही जीवन वास्तव में एक अलग ही प्रकार का जीवन है।

सो मसीही जीवन की हम क्या परिभाषा दे सकते हैं? मसीही जीवन के लिये पुराने नियम की दस आज्ञाओं की तरह कोई विशेष नियम नहीं दिए गए हैं। जबकि बहुत सी ऐसी बातों का उल्लेख हमें नए नियम में अवश्य मिलता है जिन्हें एक मसीही जन को करना या नहीं करना चाहिए, परन्तु परमेश्वर का पुत्र स्वयं हमारे लिये एक आदर्श है। पौलुस ने जैसे कि लिखकर कहा था कि एक मसीही व्यक्ति का "नया मनुष्यत्व" ऐसा होना चाहिए कि वोह "परमेश्वर के अनुरूप" हो अर्थात "सत्य की

धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया हो।" (इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 1:10)। एक मसीही जन को "परमेश्वर का अनुकरण" करनेवाला होना चाहिए (इफिसियों 5:1)। प्रभु यीशु ने कहा था कि "इसलिये चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" (मत्ती 5:48)। "जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो" (लूका 6:36)। पतरस ने यूं कहा था : "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनों क्योंकि मैं पवित्र हूं' " (1 पतरस 1:15-16)। मसीह स्वयं हमारे लिये सबसे बड़ा आदर्श है (फिलिप्पियों 2:5; 1 पतरस 2:21-24; 1 कुरिन्थियों 11:1)। सो क्योंकि स्वयं परमेश्वर ही हमारा आदर्श है, तो फिर इससे बड़े और किसी आदर्श की आवश्यकता हमें नहीं होनी चाहिए। यद्यपि हम कभी भी परमेश्वर के समान तो पवित्र नहीं बन सकते पर यदि हम अपने जीवन का आदर्श उसे बनाकर चलेंगे तो हमारे जीवन पृथ्वी पर सबसे उत्तम जीवन होंगे।

बाइबल के नए नियम में कई बार "योग्य" शब्द का उपयोग हुआ है। कई स्थानों पर शिक्षा देकर कहा गया है, कि हमारा जीवन उसके या इसके "योग्य" हो। जैसे कि लिखा है, "कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो" (फिलिप्पियों 1:27)। फिर, "तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो" (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। और, "तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो" (कुलुस्सियों 1:10)। पौलुस ने लिखकर यूं कहा था, "कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे उसके योग्य चाल चलो।" (इफिसियों 4:1)। क्या है हमारी बुलाहट? "परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं; परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।" (1 थिस्सलुनीकियों 4:7; 1 तीमुथियुस 4:9; इफिसियों 1:4)। उसने हमें "अंधकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है।" (1पतरस 2:9)। परमेश्वर हमें अपनी "संतान" कहकर सम्बोधित करता है। (1 यूहन्ना 3:1)। उसने हमें पवित्र होने के लिये बुलाया है। (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2) प्रत्येक मसीही व्यक्ति एक ऐसा मनुष्य है जिसे मसीह यीशु के लहू के द्वारा बपतिस्मा लेते समय पवित्र ठहराया गया है (1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:25-27)। सो जबकि परमेश्वर ने एक मसीही जन को पवित्र माना है, इसलिये एक मसीही का चाल-चलन अवश्य ही पवित्र होना चाहिए।

प्रेम मसीहीयत की पहचान है (1 कुरिन्थियों 13:1-3,13)। पौलुस ने कहा था: "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।" (रोमियों 13:8) "क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," (गलतियों 5:14; याकूब 2:8; मत्ती 22:36-40)। पौलुस ने एक ऐसे व्यक्ति का जो वास्तव में प्रेम रखता है बड़ा ही अच्छा विवरण किया है। (1 कुरिन्थियों 13:4-7)। यीशु मसीह स्वयं प्रेम के लिये हमारा आदर्श है (इफिसियों 5:2,25;

1 यूहन्ना 3:23)। हमें यह शिक्षा मिली है कि हमे वैसे ही प्रेम रखना चाहिए जैसे उसने हमसे रखा है। (यूहन्ना 13:34; 15:9-12)। मसीही जीवन में प्रेम का स्थान बड़ा ही विशेष है, और इसीलिये एक मसीही में प्रेम प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। (मत्ती 12:33-35; 15:18-19; 23:25-26; लूका 6:43-44)। एक मसीही के लिये आवश्यक है कि वोह अपना मन और चाल-चलन प्रेमपूर्वक बनाए। (रोमियों 12:1-2; भजन 51:10; 119:36; 2 कुरिन्थियों 10:5; इफिसियों 4:22-23)। यदि हमारे भीतर के व्यक्तित्व में प्रेम होगा, तो वोह अवश्य ही बाहर निकलकर आएगा। एक मसीही के लिये यह अति अवश्यक है कि वोह अन्दर और बाहर दोनों तरफ से अपने आपको शुद्ध रखे।

प्रेम के अलावा एक मसीही को चाहिए कि वोह अपने जीवन में अन्य अच्छी बातों को भी विशेष जगह दे। अर्थात् उसके जीवन में नम्रता, संयम, धीरज, भलाई, परमेश्वर-भक्ति, दया और क्षमा भरपूर हों (इफिसियों 4:32)। निम्नलिखित, बाइबल के, हवालों में कुछ विशेष बातों का वर्णन किया गया है जिन्हें हमें अपने जीवनों में खास जगह देने की ज़रूरत है: मत्ती 5:3-9; गलतियों 5:22-23; कुलुस्सियों 3:12-17; 1 तीमुथियुस 6:11; याकूब 3:13, 17-18; 2 पतरस 1:5-7, ऐसे ही कुछ ऐसी बुरी बातें भी हैं जिनका वर्णन हमें निम्नलिखित बाइबल के पदों में मिलता है, जिन्हें हमें अपने जीवनों से दूर रखना चाहिए: रोमियों 1:29-31; 1 कुरिन्थियों 6:9-10; गलतियों 5:19-21; कुलुस्सियों 3:5-10; 1 तीमुथियुस 1:9-11; 2 तीमुथियुस 3:2-5; याकूब 3:14-16; 1 पतरस 2:1-2.

बाइबल के नए नियम में मसीही जीवन के बारे में हमें बहुतायत से मिलता है। सबसे पहले नए नियम में हमें मसीहीयत के आधार के बारे में बताया गया है। और उसके बाद बड़े ही स्पष्ट रूप में मसीही व्यवहार के बारे में बताया गया है। (तीतुस 2:1); निम्नलिखित हवालों से पढ़कर देखा जा सकता है कि कितने विस्तार से मसीही जीवन के अलग-अलग पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। बाइबल में दर्शाया गया है कि एक मसीही का पारिवारिक, सामाजिक और व्यापारिक जीवन कैसा होना चाहिए और व्यक्तिगत और नैतिक दृष्टिकोण से एक मसीही को कैसे जीवन निर्वाह करना चाहिए। (मत्ती 5:1-7:28; 18:1-35; रोमियों 12:1-14; इफिसियों 4:17-6:20; कुलुस्सियों 3:1-4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-12; तीतुस 2:1-11; इब्रानियों 12:1-13:19; याकूब 1:2-5:20; 1 पतरस 2:11-5:11)। एक मसीही को परमेश्वर का भक्त बनना चाहिए। (1 तीमुथियुस 4:7) पौलुस ने तीमुथियुस को लिखकर कहा था कि "धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर" (1 तीमुथियुस 6:11)।